IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 1, January 2025

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का संस्कृत साहित्य को अवदान

प्रो. आशुतोष गुप्त

शोध निर्देशक, संस्कृत - विभाग

gupta.ashutosh38gmail.com

सुमन

शोधार्थिनी, संस्कृत - विभाग

skm437731gmaill.com

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड

सार

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का जन्म 15 फरवरी 1949 को मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले में हुआ। भारतीय कालगणना के अनुसार आपकी जन्मतिथि फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया, विक्रम संवत् 2005 है। प्रतिभा के धनी प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार, निबन्धकार, लेखक, उपन्यासकार अनुवादक एवं समीक्षक हैं। इनके पितामह का नाम रामप्रसाद त्रिपाठी, पिता का नाम गोकुल प्रसाद त्रिपाठी जी संस्कृत एवं हिन्दी के विद्वान् एवं समीक्षक थे जो कि महाराज महाविद्यालय छतरपुर में संस्कृत के प्राध्यापक थे। गोकुल प्रसाद जी की दो धर्मपत्नियाँ गोकुलबाई और शकुन्तला देवी थीं, इनकी माता गोकुलबाई थी। त्रिपाठी जी का विवाह श्री शिवदत्त भारद्वाज की पुत्री सत्यवती जी के साथ1974 में सम्पन्न हुआ। इनकी तीन पुत्रियाँ प्रियंवदा, मालविका,और चिन्मयी त्रिपाठी हैं। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की शिक्षा-दीक्षा एम.ए से पीएच. डी. पर्यन्त सागर विश्वविद्यालय में हुई। प्रो. त्रिपाठी को उनकी सारस्वतसाधना के लिए अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्टीय पुरस्कारों से सभाजित किया जाता रहा है। जिनमें उनकी साहित्य रचना 'सन्धानम्' के लिए प्राप्त साहित्य अकादमी पुरस्कार (1994), कालिदास पुरस्कार (1999), संस्कृत साहित्य अकादमी, संस्कृति मंत्रालय की ओर मानवी बालोपन्यास 2023 का संस्कृत बाल साहित्य पुरस्कार इस प्रकार इनको 40 से अधिक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने संस्कृत साहित्य के अक्षय भण्डार को भरा है। कविता, गजल, नाटक , उपन्यास, और निबन्ध के क्षेत्र में अपनी लेखनी चलाकर प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने जो यश प्राप्त किया और अपने कृतित्त्व के द्वारा जो लोकचेतनापरक, सांस्कृतिक और मानवतावादी सन्देश दिया है , वह न केवल संस्कृत साहित्य के लिए अपितु सम्पूर्ण भारतीय साहित्य के लिए भी गोरवपूर्ण योगदान है।

संकेत शब्द – प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, साहित्य , महाकवि , सन्धानम्।

शिक्षा

प्रतिभा के धनी आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की शिक्षा अलग - अलग स्थानों पर हुई। आपने 1965 में माध्यमिक शिक्षा परीक्षा में विज्ञान विषय के साथ मध्यप्रदेश बोर्ड से प्रथम स्थान प्राप्त किया, 1966 में उच्च माध्यमिक महाराज महाविद्यालय से, छतरपुर (सागरविश्वविद्यालय), 1968 (स्नातक) बी. ए. महाराज महाविद्यालय (छतरपुर) से , 1970 में एम. ए में न केवल बल्कि पुरे कला संकाय में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए उत्तीर्ण की। योगविज्ञान डिप्लोमा सागर विश्वविद्यालय से , आपने 1972 में (संस्कृत कवियों के व्यक्तित्व का विकास) विषय पर पीएच. डी. उपाधि प्राप्त की। आपने 1981 (Origin and Development of Theatre in Ancient-India), सागर विश्वविद्यालय से डी. लिट. उपाधि प्राप्त की। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी की ज्ञान जिज्ञासा पहले से

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 1, January 2025

ही अपार रही है आपने काशी में शीर्षस्थ आचार्यों में रेवाप्रसाद द्विवेदी, पं बदरीनाथ शुक्ल, रामप्रसाद शुक्ल, आदि को अपने विभाग में आमन्त्रित करके उनसे भी व्याकरण, न्याय, वेदान्त और साहित्य आदि के कुछ ग्रन्थों का अध्ययन किया। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी द्वारा लेखन कार्य गद्य, पद्य, नाटक, कथा, उपाख्यान, उपन्यास, रागकाव्य, अलंकारशास्त्र आदि के रूप में फलित हुई है, अनुसंधान और समीक्षा के क्षेत्र में भी आपने बहुतायत लेखन किया। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने सागर विश्वविद्यालय और उदयपुर वि.वि. में नियमित प्राध्यापक के रूप में लगभग 43 वर्षों से कार्य किया। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में कुलपति के पद पर रहते हुए प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने संस्कृत भाषा साहित्य की निरन्तर निष्ठा के साथ सेवा की। इनके कार्यकाल में ही 'राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान' नई दिल्ली में आधुनिक संस्कृत साहित्य को आश्रय मिला तथा आधुनिक संस्कृत साहित्य (सचल पुस्तकालय) का उद्घाटन हुआ तथा आधुनिक संस्कृत साहित्य की रचनाओं को एकत्रित करने का प्रयत्न किया गया। इस पद से पहले प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश में दो सत्र तक कला संकाय के अध्यक्ष रहे। इन्होंने अपनी कार्यवधि में ही इसी विश्वविद्यालय के कार्यवाहक कुलपति के रूप में भी दो बार कार्य किया है।

सम्मान

शिक्षा के क्षेत्र में आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा की गई सेवाओं और साहित्यिक उपलब्धियों को भारत की केन्द्रीय सरकार एवं उत्तरप्रदेश की सरकारों ने सराहा और पुरस्कारों से अलंकृत भी किया है। 1976 में आपको 'संस्कृत कवियों के व्यक्तित्व और विकास नामक ग्रन्थ पर उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कार दिया गया।

- उत्कृष्ट शोध पत्र लेखन हेतु 1978 में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या द्वारा पुरस्कार दिया गया।
- वाल्मीकि विमर्श पर संस्कृत अकादमी 1979
- अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन पुरस्कार 1972 तथा 1988
- संस्कृत नाटक कुन्दमाला के अनुवाद पर मध्यप्रदेश साहित्यिक परिषद् का राजशेखर पुरस्कार 1982
- भाट्टकद्वात्रिंशिका पर मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी का व्यास पुरस्कार 1987
- एशियाटिक सोसायटी बम्बई का म.प्र. पी.वी.काणे स्वर्णपदक 1989
- दमयन्ती हिन्दी नाटक पर साहित्य कला परिषद्, दिल्ली का पुरस्कार 1989
- "कालिदास की समीक्षा परम्परा" पुस्तक के लिए म. प्र. संस्कृत अकादमी का भोज पुरस्कार 1992, इसी कृति पर भारतीय प्राच्य परिषद्, पूना द्वारा हरिद्वार में 1990 में पुरस्कार।
- लहरीदशकम् के लिए उ. प्र. संस्कृत अकादमी का कालिदास पुरस्कार 1991
- हिन्दी अकादमी कलकत्ता का राष्ट्रीय हिन्दी रत्न सम्मान 1994
- सन्धानम् संस्कृत काव्य संग्रह के लिए संस्कृत अकादमी, नई दिल्ली पुरस्कार 1994
- गीतधीवरम् के लिए म. प्र. संस्कृत अकादमी का कालिदास पुरस्कार 1996
- कनाडा का रामकृष्ण संस्कृत पुरस्कार 1998
- के. के. बिडला फाउन्डेशन का शंकर पुरस्कार 2000
- सम्प्लव के लिए म. प्र. का संस्कृत परिषद् का कालिदास का पुरस्कार 2002
- अखिल भारतीय वेदव्यास सम्मान 2006
- नाट्यायन ग्वालियर का भवभूति सम्मान 2006

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 1, January 2025

- हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रयाग द्वारा महामहोपाध्याय का सम्मान 2006
- नारायण शास्त्री कांकर सम्मान,जयपुर 2007
- म. प्र. संस्कृत बोर्ड का संस्कृत गौरव सम्मान 2007
- राधाकृष्ण स्मृति सम्मान 2008
- राजीव गांधी सद्भावना सम्मान 2009
- लोकसभा प्रचार समिति का जयदेव सरस्वती सम्मान 2009
- कांची शंकराचार्य द्वारा संस्कृत शिरोमणि सम्मान 2009
- कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा नागपुर का कालिदास जीवनवृत्ति राष्ट्रीय सम्मान2009
- महाराष्ट्र सरकार द्वारा जीवनवृत्ति सम्मान 2010
- कुन्जनी राजा का राज प्रभा पुरस्कार 2010
- डक्कन कॉलेज पूना द्वारा मादन डी. लिट् सम्मान 2010
- सुत सम्वर्धन पुरस्कार 2011
- देववाणी परिषद् नई दिल्ली का पण्डितराज जगन्नाथ सम्मान 2011
- कुन्दकुन्द सम्मान कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली 2012
- मीरा सम्मान मीरा फाउण्डेशन, इलाहबाद 2012
- श्रीमती चन्द्रावती जोशी संस्कृत भाषा पुरस्कार, 2013
- अखिल भारतीय अम्बिकादत्त व्यास पुरस्कार ,राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर 2013
- नाट्य – साहित्य – कलानिधि सम्मान, चेन्नई, 01. 05. 2014
- राष्ट्रपति पुरस्कार, संस्कृत के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु , 2015
- संस्कृत साहित्य अकादमी, संस्कृति मंत्रालय की ओर से मानवी बालोपन्यास 2023 का संस्कृत बाल साहित्य पुरस्कार ।

इसके अतिरिक्त अन्य अनेक पुरस्कार आचर्य त्रिपाठी जी को प्राप्त हुए प्रो. त्रिपाठी जी ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की अनेक शोध योजनाओं को पूर्ण किया गया है ।

व्यक्तित्व

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी की लेखनी संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में खूब चली है डॉ. त्रिपाठी संस्कृत को आधुनिकता का संस्कार देने वाले विद्वान् और हिन्दी के प्रखर लेखक व कथाकार है। 16 वर्ष की आयु से ही आपने काव्य रचना क्षेत्र में पदार्पण किया। वी.राघवन् की रचना संस्कृत प्रभा में इनकी प्रारम्भिक रचनाएं प्रकाशित हुई। जिसमें **'कादम्बरी '** तथा **'अभिस्मरणीयास्मृतिः'** जैसे कथा रचनाओं को लिया जा सकता है प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी की रचनाएं 1965 - 1968 के बीच पत्र - पत्रिकाओं में छपी पाश्चात्य एवं प्राच्य के अध्ययन से आपका अनुभव इस लोक में विस्तृत एवं अगाध बना हुआ है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 1, January 2025

अभिराजराजेन्द्र मिश्र ने कहा है - **"आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी न ही पंक्तिपाण्डित्य के हिमायती हैं न ही उसके लिए प्रयत्नशील हैं। आपका अध्ययन विपुल एवं विविध है। वे समूची परम्परा का विविध ज्ञान रखते हैं।"** [1]

गंभीर व्यक्तित्व के धनी डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी की विद्वता, यथार्थ वर्णन और दार्शनिक चिन्तनयुक्त कवित्त्व के कारण विशिष्ट पहचान है। मितभाषी, प्रिय, स्पष्टवादी किन्तु बहुमुखी, युगानुरूप शैली, भावप्रबलता, नवीन वाक्य विन्यास आदि इनके आधुनिक कवि होने के पर्याय हैं।

कृतित्त्व

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी आपने अनगिनत कृतियों को प्राण दिया है आपने 15 साल की स्वल्पायु में अपनी रचना अमृतलता प्रकाशित कराई जो उस समय की प्रतिष्ठित पत्रिका थी। आपके द्वारा संस्कृत के अलावा हिन्दी भाषा में भी गद्य एवं नाट्य लेखन किया जो प्रकाशित भी है। संस्कृत भाषा में रचित आपकी कृतियों में गीतधीवरम् , अभिनवशुकसारिका, सन्धानम्, प्रेमपीयूषम्, सम्प्लवः,विक्रमचरितम्, अनुभववीथी, ताण्डवम्, अन्यञ्च, तण्डुलप्रस्थीयम्, सुशीलानाटकम्, संस्करणम् , स्मितरेखा, प्रेक्षणसप्तकम्, मानवी (बालोपन्यास) आदि हैं। हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में लिखे ग्रन्थों का आपने संस्कृत में भी अनुवाद किया है। हरिवंशराय बच्चन जी की मधुशाला का आपने समच्छन्द संस्कृत अनुवाद किया है। आचार्य जी की अनेक रचनाओं में से कुछ रचनाओं का विवरण यहां पर इस लेख में प्रस्तुत किया जा रहा है।

पद्य -

'सन्धानम्'

इस काव्य पर प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी को 1994 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सभाजित किया गया सन्धानम् नामक काव्यसंग्रह अन्तरर्जवनिकम्, बहिर्जवनिकम्, लहरीलीलायितम्, गीतवल्लरी और नमोवाक् शीर्षक पांच भागों में विभक्त हैं जिनमें 53 लघुकविताएँ संग्रहीत हैं

'गीतधीवरम्'

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी कृत गीतधीवरम् रागकाव्य है प्राचीनता और नवीनता के बीच अभिनव श्रृंखला का सृजन करता हुआ कवि यहाँ जीवन के कई पक्षों को बताते हैं। नौ सर्गों में विभक्त यह काव्य अनेक गीतियों का संकलन है जो गम्भीर और दार्शनिक हैं -

"लहरीषु मया गीतिर्लिखिता रचिता नूतनशब्दतरी।
छन्दस्सु मया जगती रचिता कलिता नूतन भावझरी ॥" [2]

कवि ने इस ग्रन्थ में सागर और धीवर के प्रतीक से गम्भीर एवं दार्शनिक पक्षों को जिस तरह उकेरा है उससे यह निश्चय ही उनकी जीवन दृष्टि के द्योतक हैं। ऐसा लगता है कि यह जीवन सागर के रूप में कल्पित है और जीव धीवर है। ग्रन्थ की भूमिका में कविवर अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने इसे 'प्रतीकरागकाव्य' की कोटि में रखा है। कवि कहीं जीवन को नौका के प्रतीक से प्रस्तुत करता हुआ तो कहीं उसकी नश्वरता तथा जीवन मार्ग की अनेक बाधाओं का निर्देशन करता हुआ कवि अपनी गीतियों में जीवन दर्शन का सर्वस्व भर देता है।

नौकां स्वकीयां तारय पारमये धीवर हे।

---

[1] अभिनव ० शुक०
[2] गीतधीवरम् गीति पृ. 7

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 1, January 2025

इतस्तिमिङ्गिलो नावं ग्रसते,

कर्दमकलुषं जलं चाऽविलम् उद्वेल्लितमिह तलं चाखिलम्। नक्र एष उत्फालं क्रमते।

सन्तर सत्त्वं धारं धारमये धीवर हे। [3]

कवि का गीतधीवर काव्य अपने आप में स्वतंत्र व्याख्या का विषय है। कवि ने यहाँ जिस भावभूमि का उन्मेष किया है, वह अति गम्भीर एवं दार्शनिक है। सम्भवतः जयदेव की गीतियों में भावों का यह संसार परिलक्षित नहीं हुआ।

गद्य

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी की अब तक 8 से अधिक गद्य रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं विक्रमचरितम्, उपख्यानमालिका, अभिनवशुकसारिका, अन्यच्च, ताण्डवम्, अनुभववीथी, स्मितरेखा (कथासंग्रह) तथा आत्मनाऽऽत्मानम्।

'मानवी' (बालोपन्यास) – 'मानवी'एक बालोपन्यास है,जो बाल्यावस्था और किशोरावस्था के बीच खड़े पिता के अभाव में बालक रघु और अपने साथियों से अलग हुई एक करुणावान् राजहंसिनी की मित्रता की कहानी है। जो पर्यावरण की थपेड़ो को झेलती हुई बोली- बानी, सभ्यता और संस्कृतियों की सरस आपसदारी के दृश्यबंध रचती है। मनुष्य और प्रकृति यहाँ पूर्ण रूप से सहज रूप में एक दूसरे से जुड़ते हैं।

नाटक -

'प्रेक्षणसप्तकम्' – प्रेक्षणसप्तकम् नामक नाट्यसंग्रह में 1.सोमप्रभम्, 2.मेघसंदेशम्, 3.धीवरशाकुन्तलम्, 4.मुक्तिः, 5.मशकधानी, 6.गणेशपूजनम् और 7.प्रतीक्षा शीर्षक सात प्रेक्षणकों में संकलित है। सभी नाटक समकालीन समस्याओं पर आधारित होने के साथ यथार्थता का प्रकटीकरण करने वाले हैं। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने सभी प्रेक्षणकों में समाज की विसङ्गतियों पर विशेष बल दिया है

(1) 'सोमप्रभम्' - इस रूपक में दहेज प्रथा के रूप में फैली सामाजिक कुरुतियों का पूर्ण चित्रित होता है। इस प्रेक्षण की मुख्य पात्र विमला के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि ईक्कीसवीं सदी में उच्चशिक्षित और कमाऊँ नारी होने पर भी उसे कैसे नारी का अभिशाप झेलना पड़ रहा है। साथ ही रूपक के माध्यम से भारतीय संस्कृति से अलंकृत भारतीय नारी की सहनशीलता, त्याग और प्रेम आदर्श भावना विश्व संस्कृति के सामने उकेरा गया है।

(2) 'मेघसन्देशम्' – कालिदास का सन्देशकाव्य मेघदूत पर आश्रित है, मेघसन्देशम् में पर्यावरण के असन्तुलन के प्रति कवि द्वारा गहरी चिन्ता की झलक दिखाई पड़ती हैं। और बालक सौरभ के हृदय में वर्षा आगमन के प्रति व्याकुलता का अतीव हृदयस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत किया है।

(3)'धीवरशाकुन्तलम्' - यह कालिदास की कृति अभिज्ञानशाकुन्तलम् की एक प्रासंङ्गिक कथावस्तु पर आधारित है। इसमें नवीन कथावस्तु का संयोजन कवि द्वारा नूतन कल्पना को बताता है।

[3] वही. पृ. 9

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 1, January 2025

(4) 'मुक्तिः' - यह एक प्रतीकात्मक एवं हास्यपूर्ण प्रेक्षण है। प्रस्तुत रूपक दर्शनशास्त्रों में विमृष्ट मुक्ति की परिभाषा से कुछ हटकर मानव समाज को सर्वथा एक नवीन दर्शन का उपदेश देते है।

(5) 'मशकधानी'-(मच्छरदानी) एक हास्य व्यंग्य पूर्ण, प्रतीकात्मक , प्रेक्षण है।

(6) 'गणेशपूजनम्' - समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार विमोचन के साथ प्रजातन्त्रीय व्यवस्था का पाठ सिखाता है।

(7) 'प्रतीक्षा' - यह प्रेक्षणक मध्यमवर्गीय परिवार की दशा का चित्रण प्रस्तुत करता है।

'प्रेमपीयूषम्' - प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी आपने एम. ए. की कक्षा में पढ़ते हुए भवभूति से प्रभावित होकर इस नाटक की रचना की। आपकी यह पहली नाट्य कृति है, जिसका विषय महाकवि भवभूति और राजकुमारी शशिप्रभा का प्रणय प्रसंग है। जिसका विस्तार सात अंको में किया गया है।

'सम्प्लवः' - सात आवर्तो में में विभक्त 'सम्प्लवः' नामक काव्यसंग्रह विभक्त है आपके द्वारा रचित यह काव्य आधुनिक विधाओं में रचित काव्य यहां संकलित है।

निष्कर्ष –

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी का संस्कृत साहित्य में बहुत गहरा योगदान है और शास्त्रीय भारतीय साहित्य पर इनका प्रभाव है। प्रो. त्रिपाठी की काव्य प्रतिभा, संस्कृत भाषा और साहित्य के लिए प्रतिष्ठित मानी जाती है। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी सांस्कृतिक एवं शैक्षिक गतिविधियों के पक्ष में रहे हैं। इन्होंने अनेक संस्थाओं की स्थापना की जिनमें इनका मौलिक योगदान है। 1982 में सागर विश्वविद्यालय में **'नाट्यपरिषद्'** की स्थापना में एक अविस्मरमणीय योगदान रहा, उसी प्रकार **'मुक्त-स्वाध्यायपीठम्'** राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में स्थापना भी इनका सराहनीय योगदान है। कवि का देश और समाज से घनिष्ठ सम्पर्क उनकी विभिन्न कविताओं में स्पष्ट रूप से चित्रित होता है। समाज के पतन में मनुष्य की भयावह स्थिति का चित्रण, आजकल – एक समाज के रूप में भ्रष्ट राजनीति और ख़राब नैतिकता के कई चित्र अपनी रचनाओं में दिए है। हालाँकि प्रो. त्रिपाठी मानवीय शक्ति और सामजिक एकता में गहरी आस्था व्यक्त करते है, इन दोनों से राष्ट्र में नवजागरण होगा। प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी की लेखन शैली और वैज्ञानिक योगदान के बाद संस्कृत साहित्य पर जो प्रभाव पड़ा है वह अतुलनीय है। साथ ही इनका अध्ययन, उत्सव, उत्सव कला और साहित्य के विभिन्न अध्ययनों का सराहनीय योगदान है, जिसमें वे भारतीय शास्त्रीय परम्परा में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन गए हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

1. 'अभिनवशुकसारिका' प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी प्रकाशन संस्कृत भारती नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष 2011
2. 'आत्मानमात्मना' प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी प्रकाशन संस्कृत भारती नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष 2011
3. 'सन्धानम्' आचार्य राधावल्लभ प्रकाशन संस्कृत परिषद् सागरम् (म० प्र०) प्रकाशन वर्ष 1989
4. 'गीतधीवरम्' राधावल्लभ त्रिपाठी प्रकाशन वर्ष 1996
5. 'प्रेक्षणसप्तकम्' आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी प्रकाशन विश्वबानी पब्लिकेशन प्रकाशन वर्ष 2024
6. 'मानवी' आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी प्रकाशन विश्व बानी पब्लिकेशन प्रकाशन वर्ष 2023